



Ankur Gupta

21 Nov 2025

05:09 PM

Gopalganj

Model: Web-MyKundli

Order No: 121298201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 21/11/2025
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 17:09:00 घंटे
इष्ट _____: 27:12:31 घटी
स्थान _____: Gopalganj
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:28:00 उत्तर
रेखांश _____: 84:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:07:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 17:16:44 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:09 घंटे
साम्पातिक काल _____: 21:19:39 घंटे
सूर्योदय _____: 06:15:59 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:00:22 घंटे
दिनमान _____: 10:44:23 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 05:11:37 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 08:36:11 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: सुकर्मा
करण _____: बालव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: नो-नौनिहाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	कार्तिक	30
पंजाबी	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	6
बंगाली	सन् : 1432	मार्गशीर्ष	5
तमिल	संवत : 2082	कार्तिकई	6
केरल	कोल्लम : 1201	वृश्चिकम	5
नेपाली	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	6
चैत्रादि	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	शुक्ल 1

पंचांग

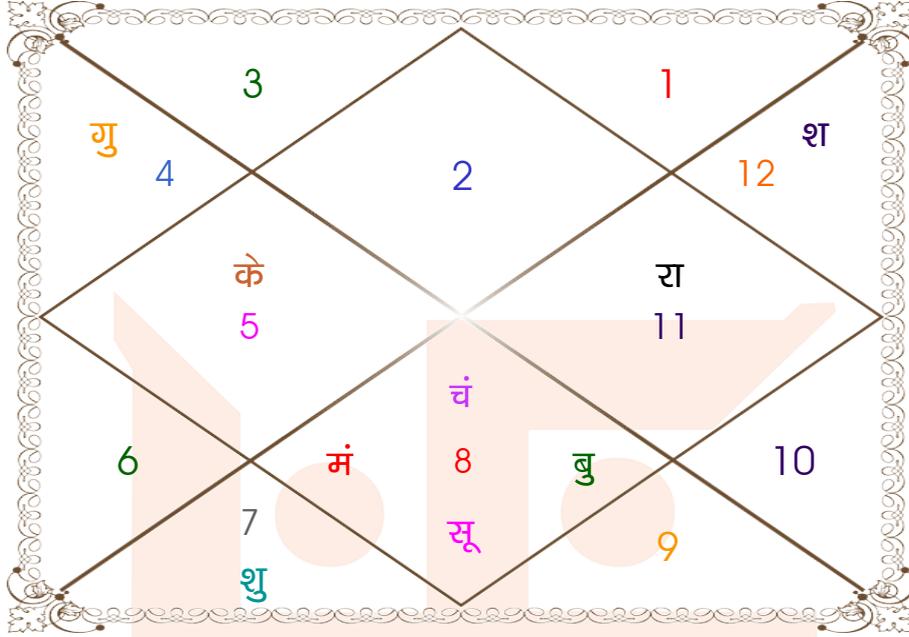
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
तिथि समाप्ति काल _____ : 14:47:29
जन्म तिथि _____ : 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 13:55:42 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 10:43:09 घंटे
जन्म योग _____ : सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 14:47:29 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 08:03:17
भभोग _____ : 67:07:42
भोग्य दशा काल _____ : बुध 14 वर्ष 11 मा 17 दि

घात चक्र

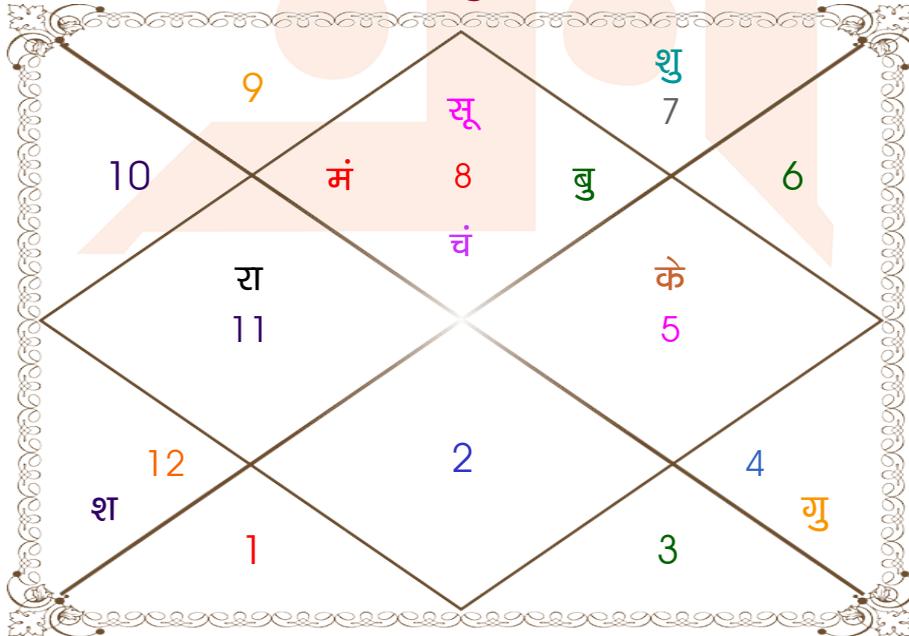
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : वृष
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

श	ल		
रा		गु	
		के	
	मं, सु, व, बृ	शु	

लग्न कुण्डली

ल	श		
	रा		
गु			
के	शु	सु, वं, मं, बृ	

विंशोत्तरी
बुध 14वर्ष 11मा 17दि
बुध

21/11/2025

10/11/2143

बुध	08/11/2040
केतु	09/11/2047
शुक्र	09/11/2067
सूर्य	08/11/2073
चन्द्र	09/11/2083
मंगल	08/11/2090
राहु	09/11/2108
गुरु	09/11/2124
शनि	10/11/2143

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 4मा 24दि
भद्रिका

21/11/2025

17/04/2030

भद्रिका	26/12/2025
उल्का	27/10/2026
सिद्धा	17/10/2027
संकटा	26/11/2028
मंगला	15/01/2029
पिंगला	27/04/2029
धान्या	26/09/2029
भ्रामरी	17/04/2030

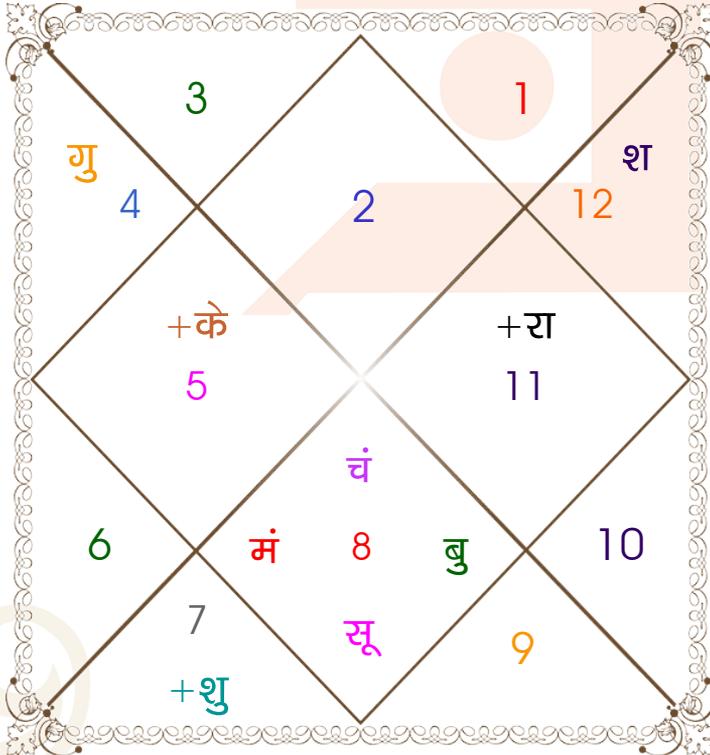
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	08:36:11	385:05:17	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य			वृश्चि	05:11:37	01:00:37	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	18:15:47	11:53:46	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	नीच राशि
मंगल	अ		वृश्चि	18:03:33	00:43:59	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	स्वराशि
बुध	व	अ	वृश्चि	02:36:56	01:19:25	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	सम राशि
गुरु	व		कर्क	00:46:21	00:01:58	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	मंगल	उच्च राशि
शुक्र			तुला	24:01:14	01:15:22	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	स्वराशि
शनि	व		मीन	00:58:40	00:00:43	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	सम राशि
राहु	व		कुंभ	20:55:54	00:14:12	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	20:55:54	00:14:12	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	05:13:38	00:02:31	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मीन	05:15:16	00:00:38	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	07:29:44	00:01:04	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			मक	23:14:47	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	सूर्य	--

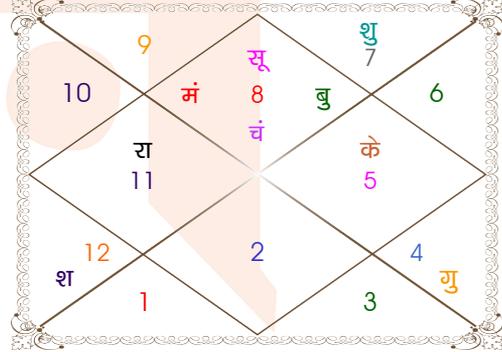
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:11

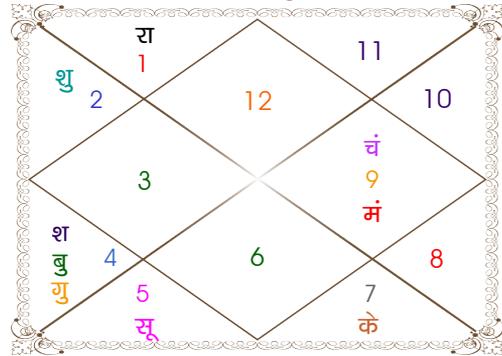
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 21:02:37	वृष 08:36:11
2	वृष 21:02:37	मिथुन 03:29:03
3	मिथुन 15:55:29	मिथुन 28:21:55
4	कर्क 10:48:21	कर्क 23:14:47
5	सिंह 10:48:21	सिंह 28:21:55
6	कन्या 15:55:29	तुला 03:29:03
7	तुला 21:02:37	वृश्चिक 08:36:11
8	वृश्चिक 21:02:37	धनु 03:29:03
9	धनु 15:55:29	धनु 28:21:55
10	मकर 10:48:21	मकर 23:14:47
11	कुम्भ 10:48:21	कुम्भ 28:21:55
12	मीन 15:55:29	मेष 03:29:03

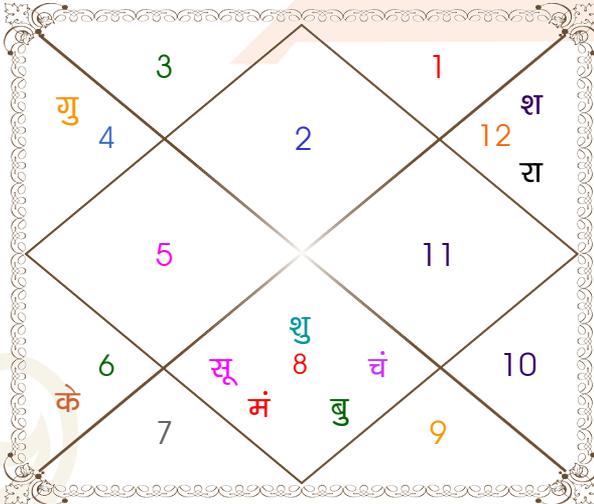
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	08:36:11
2	मिथुन	04:08:42
3	मिथुन	27:43:39
4	कर्क	23:14:47
5	सिंह	23:57:50
6	तुला	00:46:31
7	वृश्चिक	08:36:11
8	धनु	04:08:42
9	धनु	27:43:39
10	मकर	23:14:47
11	कुम्भ	23:57:50
12	मेष	00:46:31

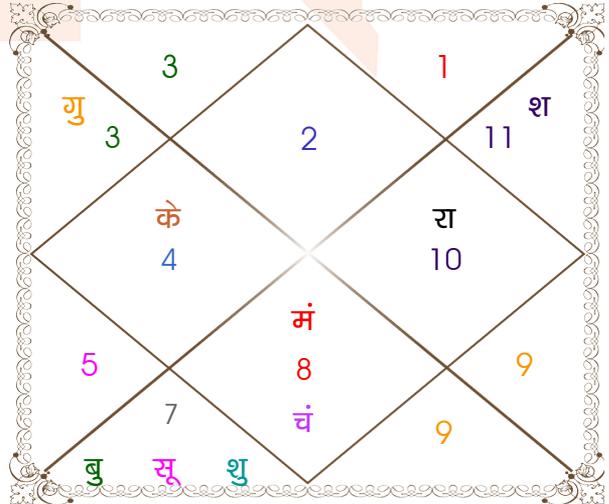
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 11 मास 17 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
21/11/2025	08/11/2040	09/11/2047	09/11/2067	08/11/2073
08/11/2040	09/11/2047	09/11/2067	08/11/2073	09/11/2083
बुध 06/04/2026	केतु 06/04/2041	शुक्र 10/03/2051	सूर्य 26/02/2068	चंद्र 09/09/2074
केतु 04/04/2027	शुक्र 06/06/2042	सूर्य 09/03/2052	चंद्र 27/08/2068	मंगल 10/04/2075
शुक्र 01/02/2030	सूर्य 12/10/2042	चंद्र 08/11/2053	मंगल 02/01/2069	राहु 09/10/2076
सूर्य 09/12/2030	चंद्र 13/05/2043	मंगल 08/01/2055	राहु 26/11/2069	गुरु 08/02/2078
चंद्र 09/05/2032	मंगल 09/10/2043	राहु 08/01/2058	गुरु 15/09/2070	शनि 09/09/2079
मंगल 07/05/2033	राहु 27/10/2044	गुरु 08/09/2060	शनि 28/08/2071	बुध 07/02/2081
राहु 24/11/2035	गुरु 03/10/2045	शनि 09/11/2063	बुध 03/07/2072	केतु 08/09/2081
गुरु 01/03/2038	शनि 12/11/2046	बुध 09/09/2066	केतु 08/11/2072	शुक्र 10/05/2083
शनि 08/11/2040	बुध 09/11/2047	केतु 09/11/2067	शुक्र 08/11/2073	सूर्य 09/11/2083

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
09/11/2083	08/11/2090	09/11/2108	09/11/2124	10/11/2143
08/11/2090	09/11/2108	09/11/2124	10/11/2143	00/00/0000
मंगल 06/04/2084	राहु 22/07/2093	गुरु 28/12/2110	शनि 13/11/2127	बुध 22/11/2145
राहु 24/04/2085	गुरु 15/12/2095	शनि 10/07/2113	बुध 23/07/2130	00/00/0000
गुरु 31/03/2086	शनि 21/10/2098	बुध 16/10/2115	केतु 01/09/2131	00/00/0000
शनि 10/05/2087	बुध 11/05/2101	केतु 21/09/2116	शुक्र 31/10/2134	00/00/0000
बुध 06/05/2088	केतु 29/05/2102	शुक्र 23/05/2119	सूर्य 13/10/2135	00/00/0000
केतु 02/10/2088	शुक्र 29/05/2105	सूर्य 10/03/2120	चंद्र 14/05/2137	00/00/0000
शुक्र 03/12/2089	सूर्य 23/04/2106	चंद्र 10/07/2121	मंगल 22/06/2138	00/00/0000
सूर्य 09/04/2090	चंद्र 22/10/2107	मंगल 16/06/2122	राहु 28/04/2141	00/00/0000
चंद्र 08/11/2090	मंगल 09/11/2108	राहु 09/11/2124	गुरु 10/11/2143	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 14 वर्ष 11 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध	बुध - केतु	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र
21/11/2025	06/04/2026	04/04/2027	01/02/2030	09/12/2030
06/04/2026	04/04/2027	01/02/2030	09/12/2030	09/05/2032
00/00/0000	केतु 28/04/2026	शुक्र 23/09/2027	सूर्य 17/02/2030	चंद्र 21/01/2031
00/00/0000	शुक्र 27/06/2026	सूर्य 14/11/2027	चंद्र 15/03/2030	मंगल 20/02/2031
00/00/0000	सूर्य 15/07/2026	चंद्र 08/02/2028	मंगल 02/04/2030	राहु 09/05/2031
00/00/0000	चंद्र 14/08/2026	मंगल 08/04/2028	राहु 19/05/2030	गुरु 17/07/2031
00/00/0000	मंगल 04/09/2026	राहु 11/09/2028	गुरु 29/06/2030	शनि 07/10/2031
00/00/0000	राहु 29/10/2026	गुरु 27/01/2029	शनि 17/08/2030	बुध 19/12/2031
00/00/0000	गुरु 16/12/2026	शनि 09/07/2029	बुध 30/09/2030	केतु 18/01/2032
21/11/2025	शनि 11/02/2027	बुध 03/12/2029	केतु 18/10/2030	शुक्र 13/04/2032
शनि 06/04/2026	बुध 04/04/2027	केतु 01/02/2030	शुक्र 09/12/2030	सूर्य 09/05/2032
बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु
09/05/2032	07/05/2033	24/11/2035	01/03/2038	08/11/2040
07/05/2033	24/11/2035	01/03/2038	08/11/2040	06/04/2041
मंगल 30/05/2032	राहु 23/09/2033	गुरु 13/03/2036	शनि 04/08/2038	केतु 17/11/2040
राहु 24/07/2032	गुरु 25/01/2034	शनि 22/07/2036	बुध 21/12/2038	शुक्र 12/12/2040
गुरु 10/09/2032	शनि 22/06/2034	बुध 17/11/2036	केतु 16/02/2039	सूर्य 19/12/2040
शनि 06/11/2032	बुध 01/11/2034	केतु 04/01/2037	शुक्र 30/07/2039	चंद्र 31/12/2040
बुध 28/12/2032	केतु 25/12/2034	शुक्र 22/05/2037	सूर्य 17/09/2039	मंगल 09/01/2041
केतु 18/01/2033	शुक्र 29/05/2035	सूर्य 02/07/2037	चंद्र 08/12/2039	राहु 31/01/2041
शुक्र 19/03/2033	सूर्य 15/07/2035	चंद्र 09/09/2037	मंगल 03/02/2040	गुरु 20/02/2041
सूर्य 06/04/2033	चंद्र 01/10/2035	मंगल 28/10/2037	राहु 30/06/2040	शनि 16/03/2041
चंद्र 07/05/2033	मंगल 24/11/2035	राहु 01/03/2038	गुरु 08/11/2040	बुध 06/04/2041
केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु
06/04/2041	06/06/2042	12/10/2042	13/05/2043	09/10/2043
06/06/2042	12/10/2042	13/05/2043	09/10/2043	27/10/2044
शुक्र 16/06/2041	सूर्य 13/06/2042	चंद्र 30/10/2042	मंगल 22/05/2043	राहु 06/12/2043
सूर्य 07/07/2041	चंद्र 23/06/2042	मंगल 11/11/2042	राहु 13/06/2043	गुरु 26/01/2044
चंद्र 12/08/2041	मंगल 01/07/2042	राहु 13/12/2042	गुरु 03/07/2043	शनि 27/03/2044
मंगल 06/09/2041	राहु 20/07/2042	गुरु 11/01/2043	शनि 27/07/2043	बुध 20/05/2044
राहु 09/11/2041	गुरु 06/08/2042	शनि 13/02/2043	बुध 17/08/2043	केतु 11/06/2044
गुरु 05/01/2042	शनि 26/08/2042	बुध 16/03/2043	केतु 26/08/2043	शुक्र 14/08/2044
शनि 13/03/2042	बुध 13/09/2042	केतु 28/03/2043	शुक्र 19/09/2043	सूर्य 02/09/2044
बुध 12/05/2042	केतु 21/09/2042	शुक्र 02/05/2043	सूर्य 27/09/2043	चंद्र 04/10/2044
केतु 06/06/2042	शुक्र 12/10/2042	सूर्य 13/05/2043	चंद्र 09/10/2043	मंगल 27/10/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

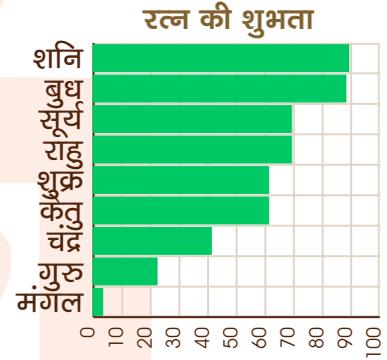
मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	89%	धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	88%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	69%	दम्पति, सुख
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
हीरा	शुक्र	61%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	61%	सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	41%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	22%	पराक्रम हानि, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	3%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	08/11/2040	75%	16%	3%	100%	22%	67%	89%	69%	61%
केतु	09/11/2047	56%	16%	15%	88%	22%	67%	77%	56%	73%
शुक्र	09/11/2067	56%	16%	3%	94%	22%	73%	95%	75%	67%
सूर्य	08/11/2073	81%	52%	15%	88%	34%	46%	77%	56%	47%
चंद्र	09/11/2083	75%	58%	3%	94%	22%	61%	89%	56%	47%
मंगल	08/11/2090	75%	52%	28%	75%	34%	61%	89%	56%	67%
राहु	09/11/2108	56%	16%	0%	88%	22%	67%	95%	81%	47%
गुरु	09/11/2124	75%	52%	15%	75%	47%	46%	89%	69%	61%
शनि	10/11/2143	56%	16%	0%	94%	22%	67%	100%	75%	47%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/02/2111-02/05/2113	22/09/2113-26/01/2114	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	धन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपकी प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप

हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, कोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(21/11/2025 - 08/11/2040)

बुध की महादशा 21/11/2025 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 08/11/2040 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपकी यात्रा, शक्ति में वृद्धि, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से सहायता मिली होगी। बुध की इस दशा में आपकी जीवन वृद्धि में उन्नति, साझेदार से लाभ और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति उत्तम रहेगी। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक समस्या, उदर रोग आदि हो सकता है। आपमें वायु, पित्त तथा कफ तीनों दोषों का मिश्रण है, अतः आपके लिए सामान्य उपचार आवश्यक है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जीवन साथी तथा साझेदार से भी लाभ मिल सकता है। सट्टे में पर्याप्त लाभ हो सकता है। विदेश से व्यापार लाभदायक हो सकता है। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ मिलेगा और आय तथा सम्मान में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी तथा सफलता और पदोन्नति प्राप्त होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोग अच्छा करेंगे। समाज में आपकी छवि उत्तम होगी, व्यापार में विस्तार और आय में वृद्धि होगी। कार्य के सिलसिले में आप यात्रा पर जा सकते हैं। जीवन में प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी तथा वाहन का सुख भी मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी लाभदायक यात्रा तथा मंगल की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप प्रतियोगिताओं तथा परिचर्चा में अच्छा करेंगे और आपकी वाक्पटुता उत्तम होगी। आप समूह-परिचर्चा तथा ऐसी अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता तथा समाचार माध्यम और जनसंचार में आपकी रुचि होगी। अन्य प्रतिभाशाली, कूटनीति और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका मस्तिष्क विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और

आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके जीवन साथी को सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को जमीन-जायदाद सुख और मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता को सफलता और लाभ मिलेगा तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहन को सट्टे में लाभ तथा सुख की प्राप्ति और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। इस दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी, सफलता मिलेगी और अध्यात्म की ओर झुकाव होगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह होगा, माता-पिता से लाभ मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र दशा में कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में बच्चों से सुख और सट्टे में लाभ मिलेगा। राहु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख, यश और ख्याति मिलेगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और लाभ हो सकता है।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(21/11/2025 - 06/04/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 21/11/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 21/11/2025 को प्रारंभ होकर 06/04/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में लाभ होगा; कार्यों में सफलता मिलेगी। कोई नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। व्यापार में साझेदार से तालमेल उत्तम रहेगा। विदेश जा सकते हैं। साहित्य, ज्योतिष, गणित और खगोलशास्त्र में रुचि होगी। लोगों से संबंध उत्तम रहेंगे। जीवनसाथी के लिए समर्पित रहेंगे। धनागम, यात्रा और सफलता का योग है।

आपके जीवनसाथी के खर्चें बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता को अचल संपत्ति प्राप्त होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, उच्च पद, धन, उत्तम शिक्षा और विरासत से लाभ का संकेत है। आपकी संतान व्यापार, संचारसाधन और कला में दक्ष हो सकती है; उन्हें स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम होगा। परामर्शदाता धनी और व्यस्त होंगे। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - केतु
(06/04/2026 - 04/04/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 21/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 06/04/2026 को प्रारंभ होकर 04/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। पैतृक संपत्ति मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। निवास जन्मस्थान से दूर हो सकता है। जायदाद से अच्छी आय होगी। प्रसिद्धि और लोकप्रियता की संभावना है। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। अदालत में जीत होगी, व्यापार में लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, धन का संचय होगा। आपकी माता प्रसिद्ध होंगी, धनी बनेंगी, आत्मविश्वास उत्तम रहेगा।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, सरकार से लाभ, रिश्तेदारों से अच्छे संबंध, उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, दृढ़निश्चय और लक्ष्य की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, यात्राएं हो सकती हैं, अधिक परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो वातावरण में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, प्रगति अच्छी होगी। व्यापारी धन कमाएंगे, व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती की मामूली व्याधि का इलाज ठीक से करवाएं। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(04/04/2027 - 01/02/2030)**

आपके लिए बुध की महादशा 21/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 04/04/2027 को प्रारंभ होकर 01/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। कर्ज का भुगतान कर सकेंगे। मुकदमे में जीत होगी। अधिक मसालेदार और गरिष्ठ भोजन से बचेंगे तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किरायेदार सहयोग करेंगे। सहकर्मियों से संबंध अच्छे रहेंगे। धन संचित होगा। सुख के साधन क्रय करेंगे। विचार आध्यात्मिक और दया से पूर्ण होंगे। लोकप्रियता और साख में वृद्धि होगी। प्रसन्नता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं मगर बचत भी करेंगे। आपके पिता सफल और लोकप्रिय होंगे। माता की कला में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसन्नता, अचानक परिवर्तन, अचल संपत्ति का लाभ, समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, भाग्य साथ देगा। अगर वे कार्यरत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धनी और सौभाग्यशाली होंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे, स्पर्धियों पर विजय होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनत्रं के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य
(01/02/2030 - 09/12/2030)**

आपके लिए बुध की महादशा 21/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/02/2030 को प्रारंभ होकर 09/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आयु में बड़े लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। व्यापार में लाभ होगा। आत्मविश्वास और सम्मान में वृद्धि होगी। विदेश जा सकते हैं। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। हर काम में सफलता मिलेगी, प्रगति होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; सम्मान और उच्चपद मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा; सरकार से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति मिल सकती है, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा अच्छी होगी, सुख-साधन होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सफलता मिलेगी और व्यापार में धनलाभ होगा।

आपकी संतान की इच्छाएं पूर्ण होंगी, साहित्य और दूरदर्शन आदि में सफलता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, धन संचित होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सक्रिय रहेंगे लाभ, सफलता और धन का संकेत है। व्यापारी सफलता और धन के भागी होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है।

**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(09/12/2030 - 09/05/2032)**

आपकी बुध की महादशा 21/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 09/12/2030 को प्रारंभ होकर 09/05/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी होगा। मानसिक और भावनात्मक रूप से खुश रहेंगे। यात्रा से खुशियां मिलेंगी। व्यापार में, खास तौर पर तरल पदार्थ, रसायन और औषधि आदि के उद्यम में लाभ होगा। महिलाओं से संबंधित कार्य भी लाभदायक होगा। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। बहुत से मित्र होंगे। समाज में सफलता और लोकप्रियता मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी को समृद्धि, सफलता और लोकप्रियता मिलेगी। आपके पिता धन का संचय करेंगे, लक्ष्य प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, वाहन सुख होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, लाभकारी निवेश, संतानसुख या संतान का जन्म, दान में रुचि, सौभाग्य, खुशी और पिता से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो संचारमाध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पेट की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को वस्त्र दान में दें।

